उदगार

उषा किरण मृदु प्रांगण को,
करे प्रकाशित सदा सदा ।
पवन झकोरे झूम झूम,
मुख चूम जगायें तुम्हे सदा ।

नीले अमबर की छाया में ,
तारागण तेरे प्रहरी हो ।
प्रिय के संग मे सहचरी बनो,
प्रतिपग पर उनके साथ चलो ।

सुरभित पुष्पो का पराग ,
नित उड करतेरी मांग भरे ।
कर्त्तवय प्रधान बने तेरा ,
आशीष स्नेह और प्यार मिले ।

ये राम लखन से कुँवर निरख,
हृद गद गद मेरा होता है ।
भरलूँ छवि आँखों में सुन्दर ,
मन अलोकित हो जाता है ।

प्रभु ने तुमको वरदान दिये ,
निरख निरख मन मुग्ध हुआ ।
देख सुखी परिवार तेरा ,
यह जीवन मेरा धन्य हुआ ।

सुधा रस्तौगी अमरकिा यात्रा के दौरान तीस सितम्बर उन्नीस सौ चौरनबें